॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

School of Social Science

Certificate

I hereby declare that the short synopsis "**भारत- चीन संबंध का समीक्षात्मक अध्ययन: वर्ष 2004 से 2024 तक" ("BHARAT – CHINA SAMBANDH KA SAMIKSHATMAK ADHYAYAN: VARSH 2004 SE 2024 TAK")** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Political Science under school of Social Sciences of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2024.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Ananda Nand Tripathi and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the repot has been submitted.

Ajit

Ajit

En. No.: **2300601**

Research Supervisor

Ananda

Dr. Ananda Nand Tripathi

Faculty of Political Science

15/5/2025

Prof. Santosha Kumar

Director of School of Social Sciences

15/05/2025

Prof. P. K. Pandey

Director, R&D Cell

"भारत- चीन संबंध का समीक्षात्मक अध्ययन: वर्ष 2004 से 2024 तक"

"BHARAT – CHINA SAMBANDH KA SAMIKSHATMAK ADHYAYAN: VARSH 2004 SE 2024 TAK"

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY IN POLITICAL SCIENCE

to

U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by

AJIT

En 2300601

Under the Supervision of

Dr. ANANDA NAND TRIPATHI

Faculty of POLITICAL SCIENCE

School of Social Science

U.P. Rajarshi Tandon Open University

Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau, Prayagraj – 211021

Ajit

सारांश (Abstract):

वर्ष 2004 से 2024 की अवधि में भारत - चीन संबंध सीमा विवाद, व्यापार जैसे विषयों पर कई महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजरे हैं। भारत में 2004 से 2014 के मध्य संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (यू•पी•ए•) और 2014 से 2024 के मध्य राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एन•डी•ए•) वैचारिक रूप से भिन्न गठबंधन की सरकार थी। यह शोध 2004 से 2024 के कालखंड में भारत-चीन सीमा पर सरकारों द्वारा लिए गए प्रमुख निर्णयों, व्यापार रणनीतिक व्यवहार जैसे विषयों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारत और चीन के मध्य व्यापार के साथ डोकलाम (2017) और गलवान (2020) जैसे विवाद में भारत द्वारा राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखकर उठाए गए कदमों से तिब्बत जैसे विषयों को उभरने की संभावना से रोका गया। सरकार के परिवर्तन से विदेश नीति में हुए बदलाव के आलोक में भारत-चीन संबंध के अध्ययन से सीमा विवाद के निराकरण और व्यापार घाटे को कम करने का मार्ग प्रशस्त होगा।

मुख्य शब्द: भारत, चीन, एन• डी• ए•, यू• पी• ए•, सीमा विवाद, व्यापार घाटा।

Ajit

CONTENTS

S. No	Description	Page No.
1	Introduction	1-2
2	Literature Review	2-7
3	Description Broad Area	7-8
4	Objectives of the Study	8-8
5	Research Methodology	8-11
6	Expected Outcome of the Research	11
	References	
	Plagiarism Report	

Ajit

1. प्रस्तावना

भारत और चीन एशिया महाद्वीप में स्थित दो पड़ोसी देश हैं। भारत, चीन के साथ एक विस्तृत सीमा क्षेत्र को साझा करता है। भारत के लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश से चीन की सीमा मिलती है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भारत- चीन के बीच सीमा पूरी तरह से सीमांकित नहीं है। 1962 के भारत- चीन युद्ध के पश्चात लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल अस्तित्व में आया। यह एक बड़ा क्षेत्र है जो भारतीय नियंत्रित क्षेत्र को चीनी नियंत्रित क्षेत्र से अलग करता है। लाइन ऑफ़ एक्चुअल कंट्रोल को तीन क्षेत्र पूर्वी क्षेत्र, मध्य क्षेत्र और पश्चिम क्षेत्र में विभाजित किया गया है। पूर्व के क्षेत्र में अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम, मध्य क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड तथा पश्चिम के क्षेत्र में लद्दाख को सम्मिलित किया जाता है। भारत से लगती सीमा पर चीन द्वारा समय-समय पर ऐसी गतिविधियों की जाती हैं जो देश के मध्य विवाद को बढ़ा देता है। चीन के द्वारा तिब्बत से उद्गगम होने वाली नदियों सिंधु, सतलज, ब्रह्मपुत्र आदि पर बांधों को निर्मित करके भारत के सम्मुख विभिन्न प्रकार की समस्याओं जैसे वर्षा ऋतु में असम में बाढ़ की समस्या, ग्रीष्म ऋतु में नदी के जल को बाधित करने से सूखे की समस्या उत्पन्न की जाती रही है। चीन लाइन ऑफ एक्चुअल कंट्रोल के पास सैनिक अवसंरचना निर्मित करके भारतीय सीमा पर तनाव पैदा करता है। भारत की सीमा के निकट चीन द्वारा उत्पन्न समस्याओं का विरोध विभिन्न मंचों के द्वारा भारत द्वारा विरोध किया जाता रहा है। वर्ष 2017 में डोकलाम में चीन द्वारा सड़क निर्माण का कार्य किए जाने का प्रयास किया गया जिसका भारत नें विरोध किया जिससे चीन को अवैध रूप से किए जा रहे निर्माण कार्य से पीछे हटना पड़ा। डोकलाम एक ऐसा क्षेत्र है जो भारत के लिए सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। भारत के उत्तर- पूर्वी राज्यों को शेष भारत से जोड़ने वाला मार्ग डोकलाम के निकट है। चीन के द्वारा डोकलाम में की जाने वाली गतिविधि भारत की विदेश नीति के सम्मुख एक प्रमुख समस्या है। भारत और चीन के बीच बफर राज्य के रूप में संप्रभु भूटान बना रहे यह सुनिश्चित करते रहना भारत की विदेश नीति के समक्ष एक प्रमुख विषय है।

Ajit

भारत शांतिपूर्ण सहअस्तित्व में विश्वास करता है। वसुधैव कुटुंबकम की विचारधारा भारत की विदेश नीति का प्रमुख सिद्धांत है। विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक भारत की आर्थिक नीति कभी भी शोषण करने वाली नहीं रही है। भारत संयुक्त राष्ट्र के विभिन्न शांति अभियानों में अग्रणी भूमिका निभाता है। संयुक्त राष्ट्र की शांति सेना में सर्वाधिक संख्या में भारतीय सैनिकों की भूमिका होती है। विश्व के किसी भाग में प्राकृतिक आपदा या किसी अन्य कारण से कोई आपदा आती है तो भारत सबसे पहले सहायता के लिए उपस्थित रहता है। 2015 में नेपाल में भयंकर भूकंप से 9000 से ज्यादा लोगों की मृत्यु हो गई। ऐसे संकट की स्थिति में भारत ने नेपाल की हर संभव सहायता की। इसी तरह मालदीव में पानी का गंभीर संकट होने पर वहां पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ऑपरेशन नीर को भारत ने प्रारंभ किया। भारत पड़ोसी पहले को हमेशा प्राथमिकता देता है। गुजराल सिद्धांत भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। सैन्य गठबंधनों नाटो आदि में भारत शामिल नहीं हुआ। भारत गुटनिरपेक्षता के सिद्धांत को अपना कर विकासशील देशों को औपनिवेशिक एवं साम्राज्यवादी शक्तियों से बचने का रास्ता दिखलाया। योग भारत की विश्व को एक अमूल्य देन है जिसके माध्यम से मानव निरोगी हो सकता है। इस तरह से विश्व को एक उम्मीद एवं सकारात्मक संदेश देने वाले देश को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्य के रूप में निश्चित होना चाहिए। भारत की विदेश नीति का प्रभाव है की सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्यों में से चार भारत के स्थायी सदस्यता का समर्थन करते हैं। चीन सुरक्षा परिषद का एकमात्र स्थायी सदस्य है जो भारत की स्थायी सदस्यता का विरोध करता है। सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता प्राप्त करने के लिए भारत की विदेश नीति के समक्ष चीन का समर्थन प्राप्त करना एक कठिन चुनौती है।

चीन भू राजनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हिंद महासागर में बंदरगाहों के निर्माण में निवेश के माध्यम से अथवा बंदरगाहों पर नियंत्रण करके एक घेरा बना रहा है जो स्ट्रिंग आफ पर्ल की रणनीति के नाम से प्रचलित है। इसमें बांग्लादेश का चटगांव, श्रीलंका का हम्बनटोटा बंदरगाह,

Ajit

पाकिस्तान का ग्वादर बंदरगाह, हार्न ऑफ अफ्रीका में जिबूती शामिल है। इस प्रकार की चीन की गतिविधि भारत की विदेश नीति के समक्ष प्रमुख चुनौती है। बांग्लादेश, श्रीलंका में इस तरह चीन की पहुंच निश्चित रूप से भारत की सुरक्षा के लिए चिंता का विषय है। चीन की इस प्रकार की गतिविधि को भारत बहुत बारीकी से देख रहा है। भारत हिंद महासागर में व्यापार को निर्बाध बनाने और दूर दृष्टिकोण को रखते हुए क्वॉड का संस्थापक बना। क्वाड में भारत, ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं जापान सम्मिलित हैं। इसके साथ भारत अपनी दूर दृष्टिकोण के अंतर्गत इसरायल, संयुक्त अरब अमीरात के साथ संबंधों को सुदृढ़ कर रहा है। भारत अपने व्यापार के हितों को ध्यान में रखते हुए मध्य- पूर्व और यूरोप के देशों को जोड़ने के लिए एक आर्थिक गलियां निर्मित करने पर विचार कर रहा है।

2. साहित्य समीक्षा

पंत, हर्ष वी, *इंडियन फॉरेन पॉलिसीः द मोदी इरा,* हर आनंद पब्लिकेशन (2019)

2014 से 2024 के समयावधि में भारतीय विदेश नीति के बारे में चर्चा इस पुस्तक से प्राप्त होती है। भारत के समक्ष द्विपक्षीय संबंधों को घनिष्ठ बनाने के साथ भारत द्वारा निर्मित उत्पादों को दूसरे देशों में निर्यात को बढ़ाने में विदेश नीति की भूमिका देखने को मिलती है। भारत ने चीन, रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान जैसे देशों के साथ अपने हितों के अनुरूप द्विपक्षीय संबंधों को विकसित किया है।

विश्वंभर, राखी, *इंडिया चीन एंड तिब्बतः ए क्वेस्ट फॉर ऑटोनॉमी,* नोवा साइंस पब्लिशर्स, (2021)

तिब्बत का भारत के लिए महत्व इस पुस्तक में बहुत ही आदर्श तरीके से समझाया गया है। तिब्बत के गौरवपूर्ण इतिहास के वर्णन के साथ इस पुस्तक में प्रमुखता से चर्चा मिलती है कि तिब्बत एक बफर राज के रूप में चीन और भारत के मध्य स्थित था। तिब्बती संस्कृति और भारतीय संस्कृति में समानता के कई बिंदुओं का उल्लेख प्रस्तुत पुस्तक में किया गया है। चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा करने के उपरांत

Ajit

तिब्बती लोगों द्वारा अनवरत स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किया जा रहे प्रयास की चर्चा की गई है। वैश्वीकरण के युग में तिब्बत की भूमिका राष्ट्रीय हित की पूर्ति में कितनी महत्वपूर्ण है समझने में यह पुस्तक उपयोगी है।

जैन, प्रो. बी एम, *अंतर्राष्ट्रीय संबंध*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादामी, 2019

शीत युद्ध के पश्चात विभिन्न देशों के साथ भारत के संबंधों को समझने के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ, गुटनिरपेक्षता, आसियान, यूरोपीय संघ का आलोचनात्मक विश्लेषण इस अत्यधिक महत्वपूर्ण पुस्तक में किया गया है। चीन की विदेश नीति को प्रस्तुत करने के साथ चीन की विस्तारवादी नीति भी प्रकट की गई है। चीन के विशेष संदर्भ में चीनी विदेश नीति के विभिन्न उपागमों नीतिगत उपागम, मार्क्सवादी उपागम एवं संस्कृति उपागम को वर्णित किया गया है।

कुमार, रंजीत, *ड्रैगन ने हाथी को क्यों डसा (भारत- चीन रिश्तो की कहानी)*, 2022

चीन की विस्तारवादी नीति के कारण सीमा पर तनाव की चर्चा इस पुस्तक में मिलती है। चीन के नागरिकों का भारत के प्रति दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने के साथ यह पुस्तक उन माध्यमों की भी चर्चा करती है जिसके माध्यम से चीनी नागरिक भारतीयों के बारे में जानते हैं। साथ में चीन द्वारा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, एनएसजी में भारत की सदस्यता का विरोध करने के कारणों की भी चर्चा की गई है। वस्तुतः भारत के प्रति चीन का दृष्टिकोण इस पुस्तक में परिलक्षित होता है।

गुरुस्वामी, मोहन सिंह, *जोरावर दौलत, इंडिया चाइना रिलेशंस: द बॉर्डर इश्यू एंड बियोंड*, विवा 2009

यह पुस्तक भारत चीन सीमा विवाद को समझने में उपयोगी है। सीमा विवाद के निराकरण को भी पुस्तक में समझाया गया है। तिब्बत और भारत के मध्य हिमालय पर्वत श्रृंखला प्राकृतिक सीमा को निर्मित करता है। तिब्बती,उत्तर पूर्व भारत और हॉन लोगों के मध्य आसमान बिंदुओं की चर्चा इस पुस्तक में मिलती है।

Ajit

सुब्रह्यण्यम, जयशंकर, *परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति*, प्रभात प्रकाशन, 2021

प्रशासनिक अनुभव और राजनीति के सम्मिश्रण से लिखित इस पुस्तक में भारतीय विदेश नीति की प्राचीनता की चर्चा की गई है। विभिन्न देशों के साथ संबंधों में विदेश नीति किस प्रकार व्यवहार करती है यह पुस्तक समझने में उपयोगी है। साथ ही प्रवासी भारतीय भारत की विदेश नीति को प्रभावित करते हैं इस विषय की भी चर्चा प्रस्तुत पुस्तक में मिलती है।

3. विस्तृत वर्णनात्मक क्षेत्र

2004 से 2024 की अवधि को दो दशकों 2004 से 2014 और 2014 से 2024 की अवधि में विभाजित करके दो भिन्न विचारधाराओं की सरकार द्वारा चीन के साथ संबंधों की समीक्षा की जाएगी। चीन के साथ किए गए औपचारिक और अनौपचारिक संवाद व्यापार घाटे को कम करने के लिए उठाए गए कदमों के साथ सीमा विवाद से संबंधित विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया जाएगा।

4. शोध अध्ययन का उद्देश्य

क) चीन के विशेष संदर्भ में भारत की विदेश नीति की पृष्ठभूमि का अध्ययन।

ख) 2004 से 2024 की अवधि में चीन के प्रति विदेश नीति में परिवर्तन का अध्ययन करना

ग) 2004 से 2024 के मध्य चीन के साथ आर्थिक संबंधों में भारत की नीति में परिवर्तन का अध्ययन करना।

घ) भारत द्वारा अपनी सैन्य शक्ति को मजबूत करने के साथ भारत, चीन सीमा पर मजबूत और स्थायी संरचना को निर्मित करके चीन से सीमा विवाद को सुलझाने का प्रयास करने का अध्ययन करना।

ङ) चीन के साथ व्यापार संतुलन बनाने के लिए भारत द्वारा उठाए गए उपायों का अध्ययन।

Ajit

5. शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध प्रारूप में विवरणात्मक और विश्लेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। प्राथमिक स्रोत के रूप में सरकारी पत्र, भाषण आदि और द्वितीयक स्रोत के रूप में भारतीय विदेश नीति पर विभिन्न पुस्तक, भारत- चीन संबंधों पर विभिन्न पुस्तक पत्र-पत्रिकाएं, शोध सामग्री, पत्र सूचना कार्यालय, विदेश मंत्रालय के द्वारा जनता के लिए उपलब्ध सार्वजनिक जानकारी आदि का प्रयोग किया जाएगा।

6. संभावित निष्कर्ष (Expected Outcomes):

1. यह शोध स्पष्ट करेगा कि वर्ष 2004 से 2024 के बीच भारत-चीन संबंधों में वैचारिक रूप से भिन्न सरकारों (यूपीए और एनडीए) की विदेश नीति ने किस प्रकार इन संबंधों की दिशा को प्रभावित किया।

2. अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलने की संभावना है कि आर्थिक सहयोग के निरंतर विस्तार के बावजूद रणनीतिक अविश्वास एवं सीमा विवाद दोनों देशों के संबंधों में मुख्य बाधाएँ बने रहे हैं।

3. शोध यह भी दर्शाएगा कि भारत और चीन की विदेश नीति में राष्ट्रहित, भू-राजनीतिक स्थिति और वैश्विक शक्ति संतुलन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

4. यह विश्लेषण इस ओर संकेत करेगा कि भारत-चीन संबंधों को स्थिर और संतुलित बनाए रखने के लिए पारदर्शी संवाद, सीमा विवादों का समाधान, और बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय सहभागिता अनिवार्य है।

5. अंततः शोध यह परिणाम प्रस्तुत कर सकता है कि यदि दोनों देश रणनीतिक धैर्य, संवाद की निरंतरता और परस्पर हितों की पुनर्परिभाषा की ओर अग्रसर हों, तो संबंधों में सुधार की प्रबल संभावनाएँ मौजूद हैं।

Ajit

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पंत, पुष्पेश, 21वीं शताब्दी में अंतरराष्ट्रीय संबंध, मैक्रगा हिल पब्लिकेशन, छठ्वा संस्करण
2. जैन, पी सी, भारत की विदेश नीति, अटलांटिक पब्लिशर्स और डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्रथम संस्करण
3. गांगुली, सुमित, भारत की विदेश नीति पुनरावलोकन एवं संभावनाएं, ऑक्सफोर्ड प्रकाशन (2018)
4. मिश्रा, केशव, भारद्वाज प्रवीण, 20वीं सदी में भारत चीन संबंध, प्रथम संस्करण
5. मिश्रा, राजेश, राजनीति विज्ञान एक समग्र अध्ययन, ओरिएंट ब्लैक स्वांन प्रकाशन सातवां संस्करण (2019)
6. ओझा, विवेक "अंतरराष्ट्रीय संबंध" राजकमल प्रकाशन दिल्ली (2020)
7. कुमार, रंजीत,भारत चीन रिश्ते ड्रैगन ने हाथी को क्यों डशा, प्रभात प्रकाशन (2022)
8. अग्निहोत्री, कुलदीप चंद्र,भारत चीन संबंध और तिब्बत मुक्ति साधन, लोकहित प्रकाशन (2012)
9. यादव, आर एस, भारत की विदेश नीति, पीयरसन एजुकेशन इंडिया, प्रथम संस्करण (2013)
10. दीक्षित, जे एन, भारत की विदेश नीति और उसके पड़ोसी, ज्ञान पब्लिकेशन हाउस (2005)
11. वैदिक, वेद प्रताप, मोदी की विदेश नीति (वैदिक की नजर में), डायमंड पैकेट बुक्स प्रथम संस्करण (2017)
12. शर्मा, प्रो भगवती प्रकाश, चीन एक आर्थिक भू राजनीतिक चुनौती, प्रभात प्रकाशन (2020)

Ajit

13. कुमार, रंजीत, ड्रैगन ने हाथी को क्यों डसा भारत चीन रिश्तो की कहानी, किंडल संस्करण

14. गाबा, ओम प्रकाश, भारतीय राजनीतिक विचारक, नेशनल पेपर बैक्स,नवीनतम संस्करण

15. कुमार, रविंद्र, भारत चीन संबंध अतीत और वर्तमान,आकृति प्रकाशन,प्रथम संस्करण (2021)

16. दीक्षित, जे एन, भारतीय विदेश नीति, प्रभांत प्रकाशन (2020)

17. सुब्रह्यण्यम, जयशंकर, परिवर्तनशील विश्व में भारत की रणनीति, प्रभात प्रकाशन (2021)

18. गुरुस्वामी, मोहन सिंह, जोरावर दौलत, इंडिया चाइना रिलेशंसः द बॉर्डर इश्यू एंड बियोंड, विवा बुक्स(2009)

19. पंत, हर्ष वी, इंडियन फॉरेन पॉलिसीः द मोदी इरा, हर आनंद पब्लिकेशन (2019)

पत्र पत्रिकाएं

- नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली
- हिंदू, नई दिल्ली
- टाइम्स आफ इंडिया, नई दिल्ली
- हिंदुस्तान टाइम्स , नई दिल्ली
- वर्ल्ड फोकस
- योजना

Ajit

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Submission Information

Author Name	Ajit
Title	BHARAT – CHINA SAMBANDH KA SAMIKSHATMAK ADHYAYAN: VARSH 2004 SE 2024 TAK
Paper/Submission ID	3612948
Submitted by	santoshauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-05-14 15:36:44
Total Pages, Total Words	12, 1231
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **7 %**

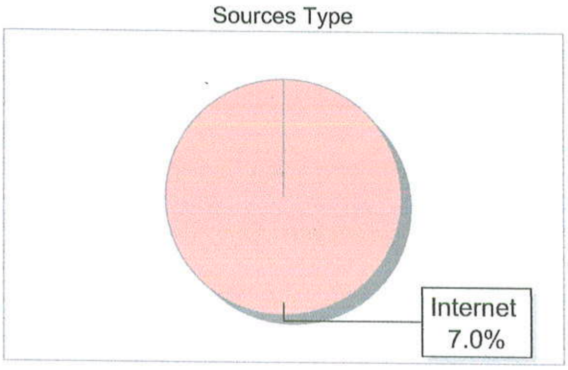

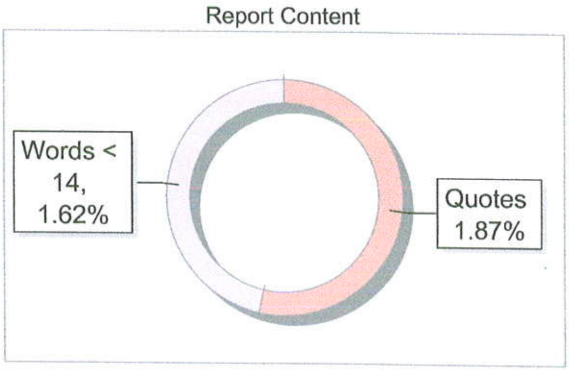

Exclude Information

Quotes	Not Excluded
References/Bibliography	Not Excluded
Source: Excluded < 14 Words	Not Excluded
Excluded Source	0 %
Excluded Phrases	Not Excluded

Database Selection

Language	Non-English
Student Papers	Yes
Journals & publishers	Yes
Internet or Web	Yes
Institution Repository	Yes

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

7	5	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	translate.google.com	2	Internet Data
2	www.slideshare.net	2	Internet Data
3	pdfcoffee.com	2	Internet Data
4	pdfcookie.com	1	Internet Data
5	www.studocu.com	1	Internet Data

Ajit